सूरः यासीन की अजमत

सादिक़े आले मुहम्मद हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सूरः यासीन क़ुरान का दिल है जो शख़्स दिन के वक़्त इस सूरः की तिलावत करेगा ख़ुदा की अमान में रहेगा। और शब को सोने से पेश्तर तिलावत करने वाले के लिए ख़ुदावन्दे आलम एक हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमायेगा जो उसके हक़ में ज़िन्दगी भर इस्तिग्फ़ार करेंगे और मरने के बाद उसके जनाज़े की मुशायिअत करेंगे नीज़ क़ब्र में साथ रहेंगे। क़यामत तक इबादत बजा लायेंगे और इस इबादत का सवाब उस बन्दे को बख़्शेंगे उसकी क़ब्र कुशादा करेंगे नीज़ उसकी क़ब्र से नूर निकलता रहेगा जिस वक़्त वह अपनी क़ब्र से उठेगा तो यह फ़रिश्ते उसके हमराह होंगे जो हंस हंस कर उससे बातें करेंगे, हर नेमत की उसे ख़ुशख़बरी देंगे हत्ता कि सिरात व मीज़ान से गुज़ार कर मलाइका मुक़र्रिबीन और अंबियाए मुर्सिलीन के मक़ाम तक पहुंचा देंगे जिनकी रिफ़ाक़त मयस्सर आने के बाद रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमायेगा कि ऐ मेरे बन्दे अगर तू चाहे शिफ़ाअत कर कि तेरी शफ़ाअत लोगों के हक़ में मक़बूल है और जो कुछ तू मुझसे चाहे तलब कर तमाम मक़्सूद तेरे तुझको इनायत करूंगा पस जिसकी वह बन्दा शफ़ाअत करेगा और जो कुछ वह तलब करेगा अल्लाह तआला उसको इनायत फ़रमायेगा उससे हिसाब नहीं लेगा और किसी गुनाह का इससे मुआख़िज़ा न होगा। क़यामत के दिन लोग उसका मतर्बा देखेंगे "सुब्हानल्लाह"! उस बन्दे से कोई छोटा सा गुनाह भी नहीं हुआ है कि उसका मुआख़िज़ा हो।

और जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम से रिवायत है कि जो शख़्स क़ुर्बतन इलल्लाह इस सूरः को पढ़े उसके तमाम गुनाह बख़्शे जायेंगे और सवाब बारह क़ुरआन मजीद के ख़त्म करने का उसको हासिल होगा और दूसरी रिवायत में वारिद है कि २२ क़ुरआन के ख़त्म का सवाब मिलेगा। अगर बीमार के सिरहाने इस सूरः को पढ़ें तो ब शुमार हर हर्फ़ के दस फ़रिश्ते उसके पास हाज़िर होंगे और उसके लिए बख़्शिश चाहेंगे उसकी क़ब्ज़े रूह के बाद उसके जनाज़े के हमराह जायेंगे उस पर नमाज़ पढ़ेंगे और दरूद भेजेंगे फिर अज़ाब से उसकी हिफ़ाज़त करेंगे और जो बीमार मरते वक़्त इस सूरः को पढ़े या कोई और सूरः उसके पास पढ़े, रिज़्वान उसके लिए हौज़े कौसर का पानी

लेकर आयेगा और उसे बेहिश्त की ख़ुश ख़बरी देगा। नीज़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस सूरः की तिलावत करने वाले और सुन्ने वाले को दुनिया व आख़िरत की बेहतरी हासिल होती है। इस सूरत को दाफ़े कहते हैं क्योंकि इसके पढ़ने वाले से दुनिया व आख़िरत की बलायें दफ़ा होती हैं और इसको क़ाज़िया भी कहते हैं क्योंकि पढ़ने वाले की तमाम हाजतें पूरी होती हैं जो शख़्स इसको एक बार पढ़े उसे २० हज का सवाब मिलता है और जो कोई उसे सुने उसे उस शख़्स के मानिन्द सवाब हासिल होता है जिसने हज़ार दीनार दिये हों और जो शख़्स उसे लिखे और धो कर पिये तो हज़ार शिफ़ायें, हज़ार नूर, हज़ार बरकतें और हज़ार रहमतें हासिल होंगी और तमाम जिस्मानी बीमारियां दूर होंगी।

नीज़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इसको क़ब्रिस्तान में तख़्फ़ीफ़े अज़ाब की नियत से पढ़े तो वहां जो दफ़न हैं उनका अज़ाब दूर होगा और जितने लोग इस मक़बरे में मदफ़ून हैं उनकी तादाद के बराबर उसे हसनात हासिल होंगे।

सूरह यासीन

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

यासीन० वल क़ुरआनिल

"यासीन, और (उस) पुर अज़ हिक्मत क़ुरआन की

हकीम० इन-न-का ल मिनल

क़सम (ए रसूल) तुम बिला शक यकीनी पैग़म्बरों में

मुरसलीन० अ़ला सिरातिम

से हो, (और दीन के बिल्कुल) सीधे रास्ते पर

मुस्तक़ीम० तनज़ीलल

(साबित क़दम) हो, जो बड़े मेहरबान (और) ग़ालिब

अ़ज़ीज़िर रहीम० लि तुंज़िर

(ख़ुदा) का नाज़िल किया हुवा (है), ताकि तुम उन

क़ौमम मा उन्ज़िर आबाअहुम

लोगों को (अज़ाबे ख़ुदा से) डराओ जिनके बाप

फ़हुम ग़ाफ़िलून० लक़द

दादा (तुमसे पहले किसी पैग़म्बर से) डराये नहीं

हक़्क़ल क़ौलु अ़ला

गये थे तो वह (दीन से बिल्कुल) बे ख़बर हैं, उनमें

अक्सरिहिम फ़हुम ला
से अक्सर पर तो (अज़ाब की) बातें यक़ीनन
युअमिनून० इन्ना ज-अ़ल्ना
बिल्कुल ठीक पूरी उतरीं यह लोग तो ईमान लायेंगे
फ़ी अअ़नाक़िहिम अग़लालन
नहीं, हमने उनकी गर्दनों में भारी लोहे के तौक़
फ़ हि-य इलल अज़क़ानि फ़
डाल दिये हैं और वह ठुड्डियों तक पहुंचे हुए हैं
हुम मुक़महून० व ज-अल्ना
कि वह गर्दनें उठाये हुए हैं (सर झुका नहीं सकते)
मिम बैनि ऐदीहिम सद्दौं व
हमने एक दीवार उनके आगे बना रखी है और एक
मिन ख़लफ़िहिम सद्दन फ़
दीवार उनके पीछे फिर ऊपर से उनको ढांप दिया
अग़शैनाहुम फ़हुम ला
है तो वह कुछ देख ही नहीं सकते, और (ए रसूल
युबसिरून० व सवाउन
स०) उनके लिए बराबर है ख्वाह तुम उन्हें डराओ
अ़लैहिम अ अन्ज़रतहुम अम
या न डराओ यह कभी ईमान लाने वाले नहीं हैं।

लम तुन्ज़िरहुम ला युअमिनून
तुम तो बस! उस शख़्स को डरा सकते हो जो
इन्नमा तुन्ज़िरु मनित त-ब
नसीहत माने और बे देखे भाले ख़ुदा का ख़ौफ़
अ़ज़ि़ज़क-र व ख़ाशियर
रखे तुम तो उसको (गुनाहों की) मआफ़ी और एक
रह्मा-न बिल ग़ैबि
बा इज़्ज़त (व आबरू) अज्र की ख़ुशख़बरी दे दो,
फ़बश्शिरहु बिमग़फ़िरातिवं
हम भी यक़ीनन मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और जो
व अजरिन करीम० इन्ना
कुछ लोग पहले कर चुके हैं (उनको) और उनकी
नह्नु नुह़यिल मौता व
(अच्छी या बुरी बाकी मान्दा) निशानियों को लिखते
नक्तुबु मा क़द्दमू व
जाते हैं और हमने हर चीज़ को एक सरीह व
आसारहुम व कुल-ल शैइन
रोशन पैशवा में घेर दिया है और (ए रसूल स०)
अह्सैनाहु फ़ी इमामिम
तुम (उन से) मिसाल के तौर पर एक गांव

मुबीन० वज़रिब लहुम म स
(इंताकिया) वालों का किस्सा बयान करो कि जब
लन अस्हाबल क़रयति इज़
वहां (हमारे) पैग़म्बर आये , इस तरह कि जब हमने
जाअहल मुरसलून० इज़
उनके पास दो पैग़म्बर (युहन्ना अ० व यूनुस अ०)
अरसलना इलैहिमुस्नैनि फ़
भेजे तो उन लोगों ने दोनों को झुठलाया तब हमने
कज़्ज़बूहुमा फ़ अज़्ज़ना बि
एक तीसरे (पैग़म्बर शमऊन अ०) से (उन दोनों
सालिसिन फ़क़ालू इन्ना
को) मदद दी तो उन तीनों ने कहा हम तुम्हारे
इलैकुम मुरसलून० क़ालू मा
पास ख़ुदा के भेजे हुए आए हैं, वह लोग कहने
अंतुम इल्ला ब-श-रुम मिस्लु
लगे कि तुम लोग भी तो बस हमारे ही से आदमी
ना व मा अंजलर रहमानु
हो और ख़ुदा ने कुछ नाज़िल (वाज़िल) नहीं
मिन शैइन इन अंतुम इल्ला
किया है, तुम सबके सब बिल्कुल झूठे हो, जब उन

तकज़िबून० क़ालू रब्बुना
पैग़म्बरों ने कहा कि हमारा परवरदिगार जानता है
यअ़लमु इन्ना इलैकुम
कि हम यकीनन उसी के भेजे हुए आए हैं और तुम
लमुरसलून० व मा अ़लैना
मानो या न मानो हम पर पस खुल्लम खुल्ला
इल्लल बलागुल मुबीन०
(अहकामे ख़ुदा का) पहुंचा देना फ़र्ज है वह बोले
क़ालू इन्ना तत़ैय्यरना बिकुम
हम ने तुम लोगों को बहुत नहस क़दम पाया (कि
लइल लम तंतहू ल-नर
तुम्हारे आते ही क़हत में मुबतला हुए) तो अगर तुम
जुमन्नकुम व लयमस्सन्नकुम
(अपनी बातों से) बाज़ न आए तो हम लोग तुम्हें
मिन्ना अज़ाबुन अलीम०
ज़रूर संगसार कर देंगे और तुमको यकीनी हमारा
क़ालू ताइरुकुम म-अ़कुम अ
दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा। पैग़म्बरों ने कहा कि
इन जुक्किरतुम बल अंतुम
तुम्हारी बद शुगूनी (तुम्हारी करनी से) तुम्हारे साथ

क़ौमुम मुसरिफ़ून० व जा अ
है। क्या जब नसीहत की जाती है (तो उसे बद
मिन अक़सल मदीन-ति
फ़ाली कहते हो! नहीं) बल्कि ख़ुद अपनी हद से
रजुलुंय यस्आ क़ा-ल या
बढ़ गये हो, और (इतने में) शहर के उस सिरे से
क़ौमित्तबिअुल मुरसलीन०
एक शख़्स (हबीबे नज्जार) दोड़ता हुवा आया और
इत्तबिअू मल ला
कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम (इन) पैग़म्बरों का
यसअलुकुम अजरौं व हुम
कहा मानो ऐसे लोगों का ज़रूर कहना मानो जो
मुहतदून० वमा लि-य ला
तुमसे (तब्लीग़ रिसालत की) कुछ मज़दूरी नहीं
अअ़बुदुल लज़ी फ़-त़-र-नी व
मांगते और वह लोग हिदायत याफ़्ता भी है और
इलैहि तुरजअ़ून० अ
मुझे क्या ख़बत हुवा है, कि जिसने मुझे पैदा किया
अत्तख़िज़ु मिन दूनिहि
है उसकी इबादत न करूं हालांकि तुम सबके सब

आलि-ह-तन इंय युरिदनिर
उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे, क्या मैं इसे छोड़
रह़मानु बि जुर्रिल ला तुग़नि
कर दूसरों को माबूद बना लूं, अगर ख़ुदा मुझे कोई
अन्नी शफ़ाअ़तुहुम शैअौं व
तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो न उनकी सिफ़ारिश ही
ला युंक़िज़ून० इन्नी इज़ल
मेरे कुछ काम आयेगी और न यह लोग मुझे (इस
लफ़ी ज़लालिम मुबीन०
मुसीबत से) छुड़ा ही सकेंगे, (अगर ऐसा करूं) तो
इन्नी आमन्तु बि रब्बिकुम
इस वक़्त मैं सरीह गुमराही में हूं, मैं तो तुम्हारे
फ़स्मअ़ून० क़ीलदख़ुलिल
परवरदिगार पर ईमान ला चुका तो मेरी बात सुनो
जन्नह। क़ा-ल या लै-त
और मानो, मगर उन लोगों ने उसे संगसार कर
क़ौमी यअ़लमून० बिमा
डाला तब (उसे ख़ुदा से हुकम हुवा) कि बहिश्त में
ग़फ़र-ली रब्बी व
जाओ (उस वक़्त भी उसे क़ौम का ख़्याल आया)

ज-अ़-ल-नी मिनल
तो कहा मेरे परवरदिगार ने मुझे बख़्श दिया और
मुक्रमीन० व मा अंज़लना
मुझे बुज़ुर्ग लोगों में शामिल कर दिया काश!
अ़ला क़ौमिही मिम बअ़दिही
उसको मेरी क़ौम (के लोग) जान लेते (ईमान
मिन जुंदिम मिनस्समा-इ व
लाते) और हमने (उसके मरने के बाद) उसकी
मा कुन्ना मुंज़िलीन० इन
क़ौम पर (उनकी तबाही) के लिए न तो आस्मान
कानत इल्ला सैह्तौंवाहि-द
से कोई लश्कर उतारा और न हम कभी (इतनी
तन फ़ इज़ा हुम ख़ामिदून०
सी बात के वास्ते) लश्कर उतारने वाले थे, वह तो
या ह़स्रतन अ़लल अ़िबाद०
सिर्फ़ एक चिंघाड़ थी (जो कर दी गई) फिर तो
मा यअतीहिम मिर रसूलिन
वह फ़ौरन (चिराग़े सहरी की तरह) बुझ के रह
इल्ला कानू बिहि
गये, हाय! अफ़्सोस बन्दों के हाल पर कि कभी

यसतहज़िऊन० अलम यरौ
उनके पास कोई रसूल नहीं आया मगर उन लोगों
कम अहलकना क़ब्लहुम
ने उसके साथ मसख़्ख़र पन ज़रूर किया, उन
मिनल क़ुरूनि अन्नहुम
लोगों ने (इतना भी) ग़ौर नहीं किया कि हम ने
इलैहिम ला यरजिऊन० व
उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला
आयतुल लहुमुल अर्ज़ुल
और वह लोग उनके पास हरगिज़ पलट कर नहीं
मैतु अह़यैनाहा व
आ सकते (हाँ) अल्बत्ता यह सब के सब एकटठा
अख़रजना मिंहा ह़ब्बन फ़
हो कर हमारी बारगाह में हाज़िर किये जायेंगे और
मिन्हु यअकुलून० व
उन (के समझने) के लिए (मेरी क़ुदरत की) एक
जअ़लना फ़ीहा जन्नातिम
निशानी मुर्दा (पड़ी) ज़मीन है कि हम ने उसको
मिन नख़ीलिंव व
(पानी से) जिन्दा कर दिया और हम ही ने उससे

अअ़नाबिवं व फज्जरना
दाना निकाला तो उसे यह लोग खाया करते हैं
फीहा मिनल अ़ुयून०
और हम ही ने उस ज़मीन में छोहारों और अंगूर के
लियअकुलू मिन स-म-रिहि
बाग़ लगाये और हम ही ने उस में (पानी के) चश्मे
वमा अमिलत-हु ऐदीहिम
जारी किये ताकि लोग उनके फल खायें और कुछ
अ-फ़-ला यश्कुरून० सुब्हानल
उनके हाथों ने उसे नहीं बनाया (बल्कि ख़ुदा ने।)
लज़ी ख़ा-ल-क़ल अज़वा-ज
तो किया यह लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते?
कुल्लहा म्मिा तुम्बितुल अर्जु
वह (हर ऐब से) पाक साफ़ है जिस ने ज़मीन से
व मिन अंफ़ुसिहिम व
उगने वाली चीज़ों और ख़ुद उन लोगों के और
मिम्मा ला यअ़लमून० व
उन चीज़ो के जिनकी उन्हें ख़बर नहीं सबके जोड़े
आयतुल लहुमुल लैलु
पैदा किये और (मेरी क़ुदरत की) एक निशानी रात

नस्लुख़ु मिन्हुन्नहा-र फ़
है जिससे हम दिन को खींच कर निकाल लेते
इज़ा हुम मुज़्लिमून० वश्शम्सु
(ज़ायल कर देते) हैं तो उस वक़्त यह लोग अंधेरे
तजरी लिमुस्तक़र्रिल लहा
में रह जाते हैं और (एक निशानी) आफ़ताब है जो
ज़ालि-क तक़दीरुल अ़ज़ीज़िल
अपने एक ठिकाने पर चल रहा है (सबसे) ग़ालिब
अ़लीम० वल क़-म-र कद्दर
वाक़िफ़ कार ख़ुदा का बांधा हुआ अंदाज़ा है, और
नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ़-द
हम ने चांद के लिए मंजिलें मुक़र्रर कर दी हैं यहाँ
कलअ़ुरजूनिल क़दीम०
तक कि हर फिर के (आख़िर माह में) खुजूर की
लश्शम्सु यंबग़ी लहा अन
पुरानी टेहनी का सा (पतला टेढ़ा) हो जाता है, न
तुदरिकल क़-म-र वलल्लैलु
तो आफ़ताब ही से यह बन पड़ता है कि वह
साबिकुन नहार० व कुल्लुन
माहताब को जा ले और रात ही दिन से आगे बढ़

फ़ी फ़-ल-किंय यसबहून० व
सकती है। (चांद सूरज सितारे) हर एक (अपने
आयतुल लहुम अन्ना
अपने) आसमान (मदार) में चक्कर लगा रहे हैं और
हमल्ना ज़ुर्रिय्य-त-हुम फ़िल
उनके लिए (मेरी क़ुदरत की) एक निशानी यह है
फ़ुल्किल मश्हून० व
कि उनके बुज़ुर्गों को (नूह अ० की) भरी हुई कश्ती
ख़ा-लक़ना लहुम मिम
में सवार किया और उस कश्ती के मिस्ल उन
मिस्लिहि मा यरकबून० व
लोगों के वास्ते भी वह चीज़े (कश्तियों व जहाज़)
इन नशअ नुग़ रिक़हुम फ़ला
पैदा कर दीं जिन पर यह लोग ख़ुद सवार हुवा
स-री-ख़ लहुम वला हुम
करते हैं और अगर हम चाहें तो इन सब लोगों का
युंकज़ून० इल्ला रह्मतम
डूबा मारें फिर न उन का कोई फ़रयादरस होगा
मिन्ना व मताअ़न इला
और न लोग छुटकारा ही पा सकते हैं मगर हमारी

ह़ीन० व इज़ा क़ी-ल
मेहरबानी से! और चूंकि एक (ख़ास) वक़्त तक
लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम
(उनको) चेल कर देना (मंज़ूर) है, और जब
वमा ख़ल्फ़कुम ल-अल्लकुम
कुफ़्फ़ार से कहा जाता है कि उस (अज़ाब से) बचो
तुरह़मून० वमा तअतीहिम
जो हर वक़्त तुम्हारे साथ साथ तुम्हारे सामने और
मिन आयतिम मिन आयाति
तुम्हारे पीछे (मौजूद) है ताकि तुम पर रहम किया
रब्बिहिम इल्ला कानू अंहा
जाय (तो वह परवाह नहीं करते) और उनकी
मुअ़रिज़ीन० व इज़ा क़ी-ल
हालत यह है कि जब उनके परवरदिगार की
लहुम अ़ंफ़िक़ू मिम्मा
निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आई तो
र-ज़-क़-कुमुल्लाह०
यह लोग मुंह मोड़े बगेर कभी नहीं रहे, और जब
क़ालल्लज़ी-न क-फ़-रू
उन कुफ़्फ़ार से कहा जाता हे कि (माल दुनिया

लिल्लज़ी-न आम-नू अ
से) जो ख़ुदा ने तुम्हें दिया है इसमें से कुछ (ख़ुदा
नुत़इमू मल लौ यशाउल्लाहु
की राह में भी) ख़र्च करो तो यह कुफ़्फ़ार
अत्-अ़-महू इन अंतुम इल्ला
ईमानदारों से कहते हैं कि भला हम उस शख़्स को
फ़ी ज़लालिम मुबीन० व
खिलायेंगे जिसे (तुम्हारे ख़्याल के मवाफ़िक़) ख़ुदा
यकूलू-न मता हाज़ल वअ़दु
चाहता तो उसको खिलाता तुम लोग बस सरीह
इन कुंतुम स़ादिक़ीन० मा
गुमराही में (पड़े हुए) हो, और कहते हैं कि (भला)
यंजुरु-न इल्ला स़ैह़तौं
अगर तुम लोग (अपने दावे में) सच्चे हो तो आख़िर
वाहि-दतन तअख़ुज़ुहुम व
यह (क़यामत का) वादा कब पूरा होगा, (ऐ रसूल
हुम यख़िस्सिमून० फ़ला
स०) यह लोग एक सख़्त चिंघाड़ (सूर) में मुंतज़िर
यसत-तीअू-न तौसि़-य-तौं
हैं जो उन्हें (उस वक्त) ले डालेगी जब यह बाहम

वला इला अहलिहिम
झगड़ रहे होंगे, फिर न तो लोग वसीयत ही कर
यरजिअ़ून० व नुफ़ि-रु़ा
पायेंगे और न अपने लड़के बालों ही की तरफ़
फ़िस्सूरि फ़ इज़ा हुम मिनल
लौट कर जा सकेंगे, और फिर (जब दो बारा) सूर
अजदासि इला रब्बिहिम
फूंका जायेगा तो उसी दम यह सब लोग (अपनी
यंसिलून० क़ालू या वैल-ना
अपनी) क़बरों से (निकल निकल के) अपने
मम ब-अ़-स़-ना मिम
परवरदिगार की तरफ़ चल खड़े होंगे। और (हैरान
मर-क़-दिना हाज़ा मा
होकर) कहेंगे हाय! अफ़सोस! (हम तो पहले सो रहे
व-अ़-दर रहमानु व स़-दक़ल
थे) हमें हमारी ख़्वाबगाह से किसने उठाया (जवाब
मुर-सलून० इन कानत इल्ला
आयेगा) कि यह वही (क़यामत का) दिन है
स़ैह़तौंव वाहि-दतन फ़ इज़ा
जिसका मैंने भी वादा किया था और पैग़म्बरों ने भी

हुम जमीउल लदैना
सच कहा था (क़यामत तो) बस एक सख़्त चिंघाड़
मुहज़रून० फ़ल यौ-म ला
होगी फिर एका एकी यह लोग सबके सब हमारे
तुज़लमु नफ़्सुन शैऔंव वला
हुजूर पेश किये जायेंगे, फिर आज (क़यामत के
तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुंतुम
दिन) किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा और
तअ़-मलून० इन-न अस्हाबल
तुम लोगों को तो उसी का बदला दिया जायेगा
जन्नतिल यौ-म फ़ी शुगुलिन
जो तुम लोग (दुनिया में) किया करते थे। बहिश्त
फ़ाकिहून० हुम व
के रहने वाले आज (रोज़े क़यामत) एक न एक
अज़वाजुहुम फ़ी ज़िलालिन
मश्ग़ले में जी बहला रहे हैं, वह अपनी बीबीयों के
अ़लल अराइकि मुत्तकिऊन०
साथ (ठण्डी) छाओं में तकिये लगाये तख़्तों पर
लहुम फ़ीहा फ़ाकिहतुवं व
(चैन से) बैठे हुए हैं। बहिश्त में उनके लिए (ताज़ा)

ल-हुम मा यद्द-अून०
मेवे (तैय्यार) हैं और जो वह चाहेंगे उनके लिए
सलामुन क़ौलम मिर रब्बिर
(हाज़िर) है, मेहरबान परवरदिगार की तरफ़ से
रहीम० वम्ताज़ुल यौ-म
सलाम व पैग़ाम आयेगा, और (एक आवाज़
अय्युहल मुजरिमून० अलम
आयेगी कि) ए गुनहगारों तुम लोग (उनसे) अलग
अअ़हद इलैकुम या बनी आद-म
हो जाओ, ए आदम की औलाद क्या मैं ने तुम्हारे
अल ला तअ़बुदूश्शैता-न
पास यह हुकम नहीं भेजा था कि (ख़बरदार शैतान
इन्नहु लकुम अ़दुव्वुम
की परस्तिश न करना) वह यक़ीनी तुम्हारा खुला
मुबीन० व अनिअ़बुदूनी
दुश्मन है और यह कि (देखो) सिर्फ़ मेरी इबादत
हाज़ा सिरातुम मुस्तक़ीम० व
करना यही (नजात की) सीधी राह है और (बा
ल-क़द अज़ल-ल् मिंकुम
वजूद उसके) उसने तुममें से बहुतेरों को गुमराह

जिबिल्लन कसीरन
कर छोड़ा तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते
अ-फ़-लम तकूनू तअ़क़िलून०
थे, यह वही जहन्नम है, जिसका तुमसे वादा किया
हाज़िहि जहन्नमुल लती
गया था, तो अब चूंकि तुम कुफ़्र करते थे इस
कुंतुम तूअदून० इस्लौहल
वजह से आज उसमें (चुपके से) से चले जाओ,
यौ-म बिमा कुंतुम
आज हम उनके मुंहों पर मुहर लगा देंगे और जो
तकफ़ुरून० अलयौ-म
जो कारिस्तानियां यह लोग (दुनिया में) कर रहे थे
नख़तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम
ख़ुद उनके हाथ हमको बता देंगे और उनके पाओं
व तुकल्लिमुना ऐदीहिम व
गवाही देंगे, और अगर हम चाहें तो उनकी आंखों
तश्हदु अरजुलुहुम बिमा कानू
पर झाड़ू फेर दें तो यह लोग राह को पड़े चक्कर
यकसिबून० व लौ नशाउ
लगाते फिरें मगर कहां देख पायेंगे और अगर हम

ल-त. मस्-ना अ. ला
चाहें तो जहां यह है (वही) उनकी सूरतें बदल कर
अअ्युनिहिम फ़स्त- बिकूस़्स़
(पत्थर मिट्टी) बना दें फिर न तो उनमें आगे जाने
रा-त़ फ़ अन्ना युब्सिरून० व
को क़ाबू रहे और न घर लौट सकें और हम जिस
लौ नशाउ ल मस़ख़्नाहुम अ़ला
शख़्स को बहुत ज़्यादा उम्र देते हैं तो उसे
मकानतिहिम फ़ मस्तताऊ
ख़लकत के उलट कर (फिर बच्चों की तरह
मुज़िय्यौंव वला यरजिअून०
मजबूर कर देते हैं) तो क्या वह लोग समझते नहीं,
व मन नुअ़म्मिरहु
और हमने न उस (पैग़म्बर) को शेअर की तालीम
नुनक्किस्हु फ़िल ख़ल्क़
दी है और न शायरी उसकी शान के लायक़ है,
अ-फ़ला तअ़क़िलून० वमा
यह (किताब) तो बस (निरी) नसीहत और साफ़
अ़ल्लमनाहुश्शिअ़-र् वमा
साफ़ क़ुरआन है, ताकि जो जिन्दा (दिल आक़िल)

यंबूगी लहू इन हु-व इल्ला
हो उसे (अज़ाब से) डराए और काफ़िरों पर (अजाब
ज़िक्रुंव व क़ुरआनुम मुबीन०
का) क़ौल साबित हो जाये (और हुज्जत बाकी न
लियुंज़ि-र मन का-न हय्यौंव
रहे) क्या उन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया
व यहिक़्क़ल क़ौलु अ़लल
कि हम ने उनके फ़ायदे के लिए चार पाये उस
काफ़िरीन० अ-व लम यरौ
चीज़ से पैदा किये जिसे हमारी ही क़ुदरत ने
अन्ना ख़लक़्ना लहुम
बनाया यह लोग उनके (ख़्वाह मख़्वाह) मालिक बन
मिम्मा अ़मिलत ऐदीना
गये और हम ही ने चार पायों को उनका मुती बना
अ'अ़ामन फ़हुम लहा
दिया तो बाज़ उनकी सवारियां हैं और बाज़ को
मालिकून० व जल्लल्नाहा
खाते है और चारपायों में उनके (और) बहुत से
लहुम फ मिंहा रकूबुहुम व
फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ (दूध) तो क्या यह

मिंहा यअकुलून० व लहुम
लोग इस पर भी शुक्र नहीं करते, और उन लोगों
फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु
ने ख़ुदा को छोड़ कर (फ़र्ज़ी) माबूद बनाये हैं
अ-फ़ला यश्कुरून० वत-त-
ताकि उन्हें उनसे कुछ मदद मिले, हालांकि वह
ख़ाज़ू मिन दूनिल्लाहि
लोग उनकी किसी तरह मदद कर ही नहीं सकते
आलि-हतल लअ़ल्लहुम
और यह कुफ़्फ़ार उन माबूदों के लश्कर हैं (और
युंसरून० ला यस्तती़अू-न
क़यामत में) उन सबकी हाज़िरी ली जायेगी, तो (ऐ
नस्रहुम व हुम लहुम जुन्दुम
रसूल स०) तुम उनकी बातों से आज़ुर्दा न हो जो
मुहज़रून० फ़ला यहज़ुन-क
कुछ यह लोग छुपा कर करते हैं और जो कुछ
क़ौलहुम इन्ना नअ़लमु मा
खुल्लम खुल्ला करते हैं हम सबको यक़ीनी जानते
युसिर्रू-न व मा युअ़लिनून०
हैं, क्या आदमी ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि

अ व लम यरल इंसानु अन्ना
हमने ही उसको एक (ज़लील) नुत्फ़ा से पैदा किया
ख़-लक़्नाहु मिन नुत्फ़तिन
फिर वह यकायक (हमारा ही खुल्लम खुल्ला)
फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम मुबीन०
मक़ाबलि (बना) है और हमारी निस्बत बातें बताने
व ज़-र-ब लना म-स-लन व
लगा और ख़िलकत (की हालत) भूल गया और
नसि-य ख़ल-क़हु क़ाल मयं
कहने लगा कि भला जब यह हड्डियां (सड़ गल
युह्यिल अ़िज़ा-म व हि-य
कर) ख़ाक हो जायेंगी तो (फिर) कौन (दो बारा)
रमीम० कुल युह्यीहल लज़ी
ज़िन्दा कर सकता है। (ऐ रसूल स०) तुम कह दो
अन-श-अहा अव-व-ल
कि उसको वहीं ज़िन्दा करेगा जिसने उनको (जब
मर्रतिन व हु-व बिकुल्लि
यह कुछ न थे) पहली मतबा ज़िन्दा कर (दिखाया)
ख़ाल्क़िन अ़लीम० अल्लज़ी
था वह हर तरह की पैदाइश से वाकिफ़ है जिसने

ज-अ़-ल लकुम मिनश-
तुम्हारे वास्ते (सुर्ख़ और इफ़्रार के) हरे दर्ख़त से
श-ज-रिल अख़्ज़रि नारन फ़
आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे (और) आग
इज़ा अंतुम मिन्हु तूक़िदून०
सुलगा लेते हो, (भला) जिस (ख़ुदा) ने सारे
अ-व लैस ल ज़ी
आसमान और ज़मीन पैदा किये क्या वह इस पर
ख़ा-ल-क़स्समावाति वल
क़ाबू नहीं रखता कि उनके मिस्ल (दोबारा) पैदा
अर-ज़ बिक़ादिरिन अला अंय
कर दे हाँ (ज़रूर क़ाबू रखता है) और वह तो पैदा
यख़्लुक़ु मिस्ल-हुम बला व
करने वाला वाक़िफकार है, उसकी शान तो यह है
हुवल ख़ाल्लाक़ुल अ़लीम०
कि जब किसी चीज़ को पैदा करना चाहता है तो
इन्नमा अम्रुहु इज़ा अरा-द
वह कह देता है कि हो जा तो (फ़ौरन) हो जाती
शैअन अंय यकू-ल लहू कुन
है, तो वह ख़ुदा (हर नुक़्स से) पाक साफ़ है

फ़-यकून० फ़सुब्हानल्लज़ी

जिसके क़ब्ज़ा कुदरत में हर चीज़ की हकूमत है

बियदिहि म-ल-कूतु कुल्लि

और तुम लोग उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे।"

शैइंव व इलैहि तुर-जअून०

☆☆☆☆☆